Indian Centre of ITI

INTERNATIONAL ASSOCIATION FOR PERFORMING ARTS AND RESEARCH

# विश्व रंगमंच दिवस २०२४

## ज्येष्ठ नॉर्वेजियन नाटककार तथा साहित्यकार इयॉन फोसे द्वारा विश्व के रंगकर्मीयों को संदेश

**कला शांति है - कला अमन है**

हर इंसान एक दूसरे जैसा होते हुए भी एक दूसरे से भिन्न है, हर एक का रूप उसका दिखना दूसरे से बिल्कुल भिन्न है, इस सब के बावजूद हम सब के अंदर कुछ ऐसा होता है जो सिर्फ और सिर्फ हमारा अपना होता है, बिल्कुल व्यक्तिगत निजी। जिसे हम स्व या आत्मा का नाम दे सकते हैं। या फिर हम उसे कोई शब्द रूप देना ही ना चाहे और छोड़ दें उसे उसके हवाले।

हम एक दूसरे से भिन्न तो हैं लेकिन हम एक दूसरे जैसे भी तो है। मूल रूप से दुनिया के हर हिस्से के लोग एक जैसे ही हैं, चाहे हम दुनिया की कोई भी भाषा बोले या उनके जिस्म और बालों का रंग कुछ भी हो।

यह अद्भुत विरोधाभास है कि हम एक दूसरे जैसे होते हुए भी एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है। संभवतः यह अंतर विरोध यह द्वैत मानव अस्तित्व का अंतर निहित गुण है, हमारी देह और आत्मा का संबंध भी द्वैत का ही संबंध है, इस धरती का मूर्त और अमूर्त, वह जो हमारी पहुंच में है और जो हमारी पहुंच से परे अलौकिक है वह भी इसी द्वैत और सह अस्तित्व का हिस्सा है।

कला,अच्छी कला,अपने कलात्मक और अनोखे तरीके से स्थानीय होते हुए भी सार्वभौमिक बन जाती है । साथ ही हममे जो भिन्न है उससे भी हमारा परिचय कराती है। आप कह सकते हैं कि कोई कला जब सार्वभौमिक है तो फिर उसमें फर्क कैसा ? अपने सार्वभौमिकता के साथ कलाएं राष्ट्रों की भौगोलिक और भाषाई सीमा के पार चली जाती है, इस प्रक्रिया में कला न सिर्फ व्यक्तिगत गुणों को बल्कि विभिन्न समूह में, विभिन्न राष्ट्रों में रह रहे लोगों की व्यक्तिगत विशेषताओं को भी साथ लाने का काम करती है।

कला में सार्वभौमिकता का तात्पर्य समस्त भिन्नताओ, समस्त अंतर विरोधों को समाप्त कर समरूप कर देना नहीं है। बल्कि इसके विपरीत कला हमें यह बताती है कि हम में अलग क्या है, पहला दूसरे से कैसे भिन्न है,उसमें अजनबियत क्या है। हर अच्छी कला हमारी भिन्नता को, कुछ समझ कर भी पूरी तरह न समझ पाने को, बड़ी बारीकी से दिखा पाती है। इस प्रकार कला में एक रहस्यासमकता होती है कला ज्ञेय होते हुए भी अज्ञेय होती है। कला का यही अज्ञेय पक्ष हमें आकर्षित करता है और कला सृजन के लिए निरंतर प्रेरित करता रहता है और हम अपनी सीमा का विस्तार करते हुए उससे परे जाकर कुछ ऐसा सृजित करते हैं जो ज्ञेय होते हुए भी अज्ञेय बना रहता है, जहां पहुंच कला और कलाकार दोनों अलौकिकता का एहसास प्राप्त कर पाते है।

AVARTAN, 5 HILL VIEW SOCIETY, 46/4 ERANDAWANE, PAUD ROAD, PUNE, MAHARASHTRA 411038
Email: iapar.india@gmail.com

दो विपरीत को एक साथ एक स्थान पर लाने का कला से बेहतर कोई दूसरा माध्यम हो ही नहीं सकता। पूरी दुनिया में  हम जो हिंसक संघर्ष देख रहे हैं, जिसमें एक दूसरे के अनूठेपन, उसकी अलग प्रकृति, उसके परायेपन को हम मानवता विरोधी तकनीकों का प्रयोग कर ध्वंस कर देना चाहते हैं। दुनिया में आतंकवाद है युद्ध है, लोगों के अंदर पशुता का ऐसा भाव है जहां वे अपने अतिरिक्त किसी दूसरे को जो उनसे भिन्न है देखना पसंद नहीं करते, भिन्नता उन्हें अपने अस्तित्व के लिए खतरा नजर आने लगती है, भिन्नता में जो आकर्षण और अलौकिकता है वह उसे देख ही नहीं पाते। कला इस हिंसक दृष्टिकोण के विरुद्ध भिन्नता के पक्ष में खड़ी होती है।

यह जो अनुठापन और विविधता हम देख पाते हैं वह समाप्त हो जाएगा और नीरस एक रूपता छोड़ जाएगा, जहां भिन्नता को हम खतरे की तरह देखेंगे, इस नजरिए को समाप्त करने की आवश्यकता है। बिना भिन्नता के चाहे वह धार्मिक या राजनीतिक विचारधारा की भिन्नता हो, रह ही क्या जाएगा। इसलिए जरूरी है की इस तरह के प्रयास और विचार को न सिर्फ पराजित किया जाए बल्कि उन्हें हमेशा हमेशा के लिए समाप्त कर दिया जाए।

यह युद्ध संघर्ष है हमारे अंतर्निहित छिपे अनूठेपन के खिलाफ। यह युद्ध है कला के विरुद्ध और कला में अंतर निहित उस अज्ञेय के विरुद्ध।

यह बातें मैं मात्र रंगमंच या नाट्यालेख के संदर्भ में नहीं कर रहा हूं, मैं बात कर रहा हूं समस्त कलाओं के संदर्भ में। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं क्योंकि मेरा मानना है की सभी अच्छी कलाए इन्हीं चीजों के इर्द-गिर्द घूमती है। क्योंकि अच्छी कला हमेशा उसी अनूठेपन, उसी विशिष्टता के इर्द-गिर्द घूमती कलाओं को सार्वभौमिक बनाती हैं। अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से विशिष्टताओं को एकजुट करती उन्हें सार्वभौमिक बना देती हैं। कला विशिष्ठाओं को समाप्त नहीं करती बल्कि उस विशिष्ट को रेखांकित करती है और जो भी बाहर का है अजनबीयत से भरा है उसे रौशन कर देती है। कलाओं के माध्यम से विविधता और भिन्नता प्रकाशमान हो जाती है।

सीधी सी इतनी बात है की युद्ध और कला दो विपरीत ध्रुव हैं, जैसे कि युद्ध और शांति। कला अमन के पक्ष में खड़ी है।

---

International Theatre Institute / World Theatre Day Message 2024
**Jon FOSSE, Norwegian writer, playwright, Norway.**
Hindi Translation (India) – Asif Khan, India